P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कालीदास की नारी पात्रों का ललित कला में योगदान

किरन
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
इन्दिरा गाँधी राज0 स्ना0 महाविद्यालय,
बांगरमऊ,उन्नाव

सारांश

इतिहासकारों के अनुसार ललित कला मात्र चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला एवं छापने की विधि एक सीमित थी परन्तु आधुनिक युग में ललित कला का विषय बहुत ही व्यापक हो गया है। इसमें लेखन कला नृत्य नाट्य वास्तुकला, छायाचित्र आदि को ललित कला से जोड़कर देखा जाता है। परन्तु कालिदास के काव्यों में ललित कला सर्वोत्कृष्ट उन्नति पर थी उनकी कृतियों में पुरूष के साथ–साथ महिलाये भी ललित कला में निपुण थी।

मुख्य शब्द : कालिदास, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, आधुनिक युग

प्रस्तावना

मानव समाज में प्रतिभा सम्पन्न पुरूषों के अतिरिक्त नारियों ने अपनी सुकुमारता से अपनी सात्विक भावनाओं को कागज प्रस्तर आदि के माध्यम से अभिव्यक्ति की। पार्थिव पदार्थों में कला ही सौन्दर्य एवं सजीवता सुकुमार मनोभावों साकार रूप प्रदान करती है। कला अखण्ड रूप से लालित्य प्रधान होने कारण ही इसे ललित कहा गया है। कालिदास ने स्वयं सभी प्रकार की कलाओं को ललित रूप आरोपित किया है।

''गृहिणी सचिवः सखी मिथ! प्रियशिष्या [1]
ललिते कला विधौ।

ललित कला का अभिप्राय काव्य संगीत, नृत्य चित्रकला से होता है। जैसे कालिदास के मालविकाग्निमित्रम में नृत्य को ललित शिल्पमाना है।

भो वयस्य न केवल रूपे शिल्पेऽय द्वितीय मालविका [2]

कालिदास के नारी पात्र ललित कला के सभी क्षेत्रों ने विकास और योगदान दिया।

काव्य कला

सर्वप्रथम काव्य कला कालिदास के नारी पात्रों में परिलक्षित होती है। शकुन्तला से दुष्यन्त जब प्रणय का निवेदन करते है तो शकुन्तला छन्द रूप की रचना करते हैं।

उन्नतिमूलतमानमस्याः षदानि रचयान्त्या कष्टकितेन प्रथयति ममयनुराग कपोलेन[3]

इस प्रकार मालविकाग्निमित्रम् में छन्द पूर्ण आपने सुकुमार भावों से प्रणय के लिए व्यक्त किया। विक्रमोर्वषीय में उर्वशी का काव्य बन्ध उल्लेख मिलता है।

काव्यबन्धः उर्वष्याः[4]

नाट्यकला

नाट्यकला की श्रेष्ठता सामान्यतः 'काव्येषु नाटकम रम्यम' नाटकान्तं कवित्वम् आदि सूक्तियों के माध्यम से स्वीकृत की गई है। उस समय नाटक विवाहोत्सव के अवसर नाटक का अभिनय प्रस्तुत किया जाना या पुरूषों के साथ आधुनिक युग के समान ही नारी पात्र सुन्दर सदृष हाव भाव से नृत्य द्वारा अभिनय कर राग और रस वृत्ति करते थे ''तौ सन्धिषु व्यजित वृत्ति भेदंरसान्तरेषु।

प्रति बृद्ध रायम

अपश्यताप्सरसा मुहूर्त्त प्रयोगम ललितागहारम्।[5]

विक्रमोर्वषी में भरतमुनि ''लक्ष्मी स्वयंवरनाटक में मेनका उर्वषी आदि को द्वारा अभिनय का पात्र मिलता है। नाट्यकला में हर्ष विषाद आदि का प्रयोग होता था कभी–कभी अन्यमनरन्कता संवादों के स्खलन के कारण त्रुटि भी होती थी तो नाट्य निर्देशकों या शिक्षक का कोपभाजन होता था।

ततः पुरूाषोंत्तमें इति भणितत्ये पुरूर वसीति [6]
तस्य निगता वाणी सा खलुषप्ता उपाध्यायें।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

संगीत कला

प्राचीन भारतीय साहित्य में दो विद्या संगीत और भाषा साहित्य थे। क्योंकि संगीत के स्वरों के मूल तत्व माहेश्वर सूत्र ही। कालिदास ने अपने नाटकों में संगीत कला को बहुत महत्व दिया है। संगीत कला के मुख्य तीन अंग होते है। गीत, वाद्य और नृत्य संगीत के बिना नाट्य कला भी अधूरी है। कालिदास ने नाट्य कला कला के साथ संगीत कला के सभी अंगो का अपने नारी पात्रों का समावेश किया है।

गीत कालिदास के समय विशिदा अवसरों पर नारी पात्रों के द्वारा राग बद्ध शास्त्रीय संगीत और लोक गीत प्रचलित थे। कालिदास ने गीत शब्द सभी प्रकार के गीतों के लिए प्रयुक्त था वैसे नारियं प्रकृत में ही था।

इस्नीसि चुविआई'' ममरेहि सुकमार केसर सिहं''[7]

मेघदूत में यक्ष की प्रिया वीणा बजाकर अपने प्रति के गुण गाती थी।

उत्संगे वा मलिन वसने सौम्य निक्षिव्य वीणा मद गोत्रांक
विरचित पदम गोयमुदगातुकामा [8]

कन्याप्रदेश के लोकगीत में वंशी का अधिक प्रयोग होता था कालिदास के नारी पात्र गीत कला में सिद्ध हस्त थे। वाद्य वाद्यविदो में तंत्रीरत वीणा आदि मुरज पट्ट आदि सुशिर रन्ध्रयुक्त वंशी धातु निर्मित वाद्य यंत्र में नाम प्रयुक्त है। संगीत दामोदर में उन्तीस प्रकार की वीणा का उल्लेख मिलता है। कालिदास ने वीणा और तंत्री शब्द के अतिरिक्त वल्लकी का उल्लेख मिलता है।

वल्लकी काकलिगीत स्वरैबिबोध्यत वेणुना दर्शन पीड़ितः
धारा वीणाये नख पदाकितौः रव [9]

टीकाकार मलिनाथ ने वल्लकी तथा परिवादिनी सात तारों की वीणा अभिन्न माना है। के.बी.रामचन्द्र वायु प्रवाह से बनजे वाली विशिष्ट प्रकार की वीणा 'एओलियन हार्न' नामक वीणा को समीकृत किया है।

सुशिर वाद्य अर्थात रन्ध्र युक्त शंख श्रृग कीचक वंशी आदि वाद्य यंत्र थे। कालिदास ने मांगलिक वाद्य यंत्रों में शंख तूर्य सामान्य बाद्य में वेणु कीचक आदि का उल्लेख मिलता है।

वेणुना दर्शन पीडितः धारः वीणाये नख पदांकितोरव
सुखश्रवा मंगल तुर्य निस्वनाः प्रमोद नृत्ये सह
वारपोषिताम[10]

अवनद्ध वाद्य यंत्र वो होते है जो चर्म से मढ़े हुए होते है। पुष्कर मुरज मृदंग पट्ह दुदभि का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार के वाद्य यंत्र पुरूषों के साथ नारी भी बजाती थी।

श्रोतेषु स मूर्च्छति स्वतामासाः गीतानुगवारिमृदाताद्यसम

रघुवंश के सोलहवें सर्ग में करतलों उंगलियों के द्वारा मृदंग गम्भीर ध्वनि का उल्लेख मिलता है। घनवाद्य धातु के बने घंटा किकिर्णा का प्रयोग मिलता है।

रथो रथांग ध्वमिना विपसे विलोल घण्टा [11]
क्वणितेन नागः

नृत्य कला नृत्य (ताल लयाश्रि) नृत्य (मावाश्रित) भाव रस समन्तिता नृत्य कला संगीत कला को समग्रता प्राप्त होता है। यह कला राजा के आमोद प्रमोद पुत्रोजन्मोत्सव पर नृत्य कला में निपुण नर्तकियां नृत्य किया करती थी। मालविकाग्नि मित्रम में नृत्य कला में पारांगत रानी इरावती के अतिरिक्त मालविका के पंचाभिनेय से पूर्ण श्रेष्ठ नृत्य कला ' छलिके'' नृत्य का उल्लेख मिलता है।

जनमिमसुरतम बिद्धि नाथेतिगये वचनमभि
नयात्याः स्वांग निर्देशपूर्वम
परिणयमतिम द्रष्ट व धारिणी सनिकार्थवी
दहमिव सुकुमार पार्थ अव्याज मुक्तः[12]

चित्रकलाः प्रायः चित्रकला का आधार समतल पर (कपड़ा, कागज काष्ठ) आदि में रहता है जिस पर नारी व पुरूष दोनों ही अपनी तूलिका आदि से विविध प्रकार की वस्तुओं में सजीवता प्रदान की जाती है। उसके मानसिक भावों दृश्यों घटनाओं या विशिष्ट व्यक्ति के सरूपों में सजीव रूप से चित्रित की गयी हैं। सम्पन्न वर्ग के द्वारा निर्मित 'चित्रशालाओं, चित्रवत्सदमों में नारियां भी जाकर चित्र रचना करने या देखने में प्रवृत्त थी मालविकाग्निमित्रम में देवी धारिणी चित्रकला की प्रियता का उल्लेख किया है।

चित्रशालां गतः देवी यदा प्रत्यग्रवर्णरागां
चित्रलेखामाचार्यास्यालोकयन्ति तिष्ठति[13]

चित्रकला के उपकरण शुष्क और आर्द्र चित्रों का उल्लेख के आधार पर चित्र तैयार करने के लिए तूलिका Brush कर्तिका Colour Pencil प्रयुक्त होती थी। कूर्च तूलिका जो लम्बे छोटे और मोटे होते थे। कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम में एक स्थान पर विदूषक से संवाद में लम्बे कूर्च का उदाहरण मिलता है। यथाहं पष्यामि पूर्ति व्य ममनेम चित्रफलकम लम्ब कूर्चानाम तापसानाम कदम्वै जिस पेटिका में चित्रकला के उपयोगी वस्तुओं को रखते थे उसे वर्तिका खण्ड कहा जाता था।[14]

वर्तिका करण्ड गृहित्वेतोमुखप्रस्थिताऽसि कालिदास ने अनेक प्रकार के चित्रों का उल्लेख किया है सामूहिक चित्र, व्यक्तिगत चित्र, वस्तु चित्र और स्मरण शक्ति निर्मित विशेष रूप से उल्लेखनीय है।[15]

''भो इदानीतित्रस्तत्रभवत्योदृष्यन्ते सर्वाष्य दर्षनीय कतमात्रा भवति''[16]

शकुन्तला सामूहिक चित्र का उदाहरण मालिविकाग्निमित्रम में रानी के साथ दोनों सखी को भी चित्रित किया गया है।

व्यक्तिगत चित्र उत्तर मेघदूत में यक्ष के द्वारा दक्षिणी चित्रांकन और यक्षिणी के द्वारा अपने पति निर्वासित पति यक्ष का उदाहरण मिलता है। मत्सादृष्य विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ति।[17]

इस प्रकार व्यक्तिगत चित्र का उल्लेख मिलता है।

वस्तु चित्र में नारियां किन्हीं वस्तु या पदार्थों का विषयगत चित्रण चित्रों में करती थी। उन्हे वस्तु चित्र कहते थे। उत्तरमेघ यक्षिणी द्वारा पदम, शंख के चित्र तथा मालविकाग्निमित्रम में नाग मुद्रांकित अंगुलिका वस्तु चित्र के रूप में प्राप्त होते है। सखी देव्या इद शिल्पि सकाषादानीतम नाग मुद्रा सनाथमगुलिपका स्त्रिगंध निध्यायन्तो।[18]

स्मरण शक्ति निर्मित चित्र कालिदास के काव्यों में स्मरण शक्ति निर्मित चित्र सिद्धहस्त प्रदर्शित किया

जाता है। कुमार संभव में पार्वती जी ने स्मरण शक्ति के माध्यम से शंकर का चित्र निर्मित किया था।

मासादृश्यम विरहतनुवभावगम्यम लिखन्ति[19]

चित्रकला के अभ्यास में नारियां व्यस्त रहती थी। जीवन में समय निकालकर वह चित्रकला किया करती थी। मनोविनोदार्थ विरह दीर्घवधि काटने के लिए प्रियतम का चित्रांकित करती थी।

मूर्तिकला मानवीय मनोभावों को मूर्ति रूप देने के लिए ललित कला में मूर्ति कला का महत्वपूर्ण स्थान है। कालिदास ने अपने नाटकों में पुरूष और पक्षियों की मूर्ति का उल्लेख मिलता है। विक्रमोर्वषीय में उपमान के रूप में अलसाये हुए मयूरों की मूर्तियों का वर्णन मिलता है। अयोध्या के शून्य प्रसादों के उत्कीर्ण प्रतिमाओं का भी वर्णन मिलता है। गंगा, यमुना की चामर धारिणी गुप्त काल के प्रारम्भ में था इस प्रकार की मूर्तियां मथुरा संग्राहलय में मिलती है। कालिदास के काव्यों में देव मूर्तियां ब्रह्मा शेषधारी, कमलासनी लक्ष्मी, मयूराक्षी कार्तिकेय कपाल भारण काली, कामदेव, यक्ष, शिव आदि की प्रस्तर मूर्तियां मिलती है। अभिज्ञान शाकुन्तलम में मृग मूर्तियों का भी संकेत मिलता है। मूर्तिकला के समान भी वस्तुकला का भी विवरण मिलता है।

उपोषित वास्तु विधान विद्भी निवत्यै मास रघुप्रवीरः [20]
तावत्पताका कुल निन्दुमौलिश्रतोरण राजपथम प्रपदे [21]
मूर्त च गंगा यमुने तदानी सचामरे दैवमसेविषताम
स्तनोत्वरायाणि भवन्ति संगान्निर्मोकपट्टाः फणिभविमुक्ताः[22]

अध्ययन का उद्देश्य

अपने शोध पत्र ''कालीदास के नारी पात्रों का ललित कला में योगदान'' के माध्यम से कालिदास के काव्यों में ललित कला में नारियों का योगदान एवं सौन्दर्य को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। कालिदास के काव्यों में नारी को सभी ललित क्षेत्रों में सर्वोष्कृट थी । जिसमें मानवीय सवेंदनाओं की सुन्दरतम् अभिव्यक्ति की दिशा में सार्थकता दिखाई देती है। जोकि भारतीय संस्कृति को संसार भर में संपादित एवं गौरवन्तित है।

निष्कर्ष

वास्तुकला के नियमानुसार किसी कार्य को सम्पन्न कराने के लिए स्थापत्य अधिष्ठाता देवता की पूजा की जाती है जिसमें स्त्री और पुरूष दोनों बलि देते थे, परन्तु नारी पात्र वास्तुकला में परागत रूप से कार्यशील प्रत्यक्ष रूप में परिलक्षित नहीं होती है। इस प्रकार समाज में प्रायः पुरूष की अपेक्षा नारी स्वभाव से ललित कला असाधारण अभिरूचि और दक्षता रखती थी। इसलिए कालिदास काव्य कृतियों में अनेक नारी पात्र नृत्य, नाटक, काव्य, गतिका काव्य आदि में विविध लिप्त प्राप्त होता है। यही ललित कलाओं की मानवीय संवेदनाओं की सुन्दरतम अभिव्यक्ति की दिशा चरम और सार्थकता दिखाई देती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रघुवंश 8/67
2. मालविकाग्निमित्रम द्वितीय अंक
3. अभिज्ञान शाकुन्तलम 3/12
4. विक्रमोवर्षीय द्वितीय अंक पृष्ठ 365
5. कुमार सम्भव 7/91
6. विक्रमोवर्षीय पृष्ठ 360
7. अभिज्ञान शाकुन्तलम 1/4
8. उत्तर मेघदूतम 26
9. ऋतुसंहार 1/8
10. रघुवंश 19/35
11. रघुवंश 16/64
12. रघुवंश 6/4
13. मालविकाग्निमित्रम 2/5
14. अभिज्ञान शाकुन्तलम षष्ठम
15. अभिज्ञान शाकुन्तलम षष्ठम अंक
16. '' ''
17. उत्तरमेघदूतम 25
18. मालविकाग्निमित्रम
19. रघुवंश 18/39
20. रघुवंश 16/38
21. कुमारसम्भव 7/63
22. कुमारसम्भव 7/42